भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के राज्यवार अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों का मात्रात्मक विश्लेषण

(Quantitative Analysis of Economic Impacts of Statewise Inflow of Foreign Direct Investment in India)

परवेज अली
शोधार्थी,
अर्थशास्त्र विभाग,
गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय,
बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

कैलाश चन्द नायमा
शोध निदेशक,
अर्थशास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
डूंगरपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

जुलाई 1991 की नई आर्थिक नीति की घोषणा के पश्चात् अर्थव्यवस्था का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र रहा होगा जिस पर उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण का प्रभाव न पड़ा हो। नई आर्थिक नीति ने अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने के साथ–साथ भारतीय एवं विदेशी निवेशकों को नए अवसर प्रदान किए। वर्ष 1991 के बाजारोन्मुख आर्थिक सुधार, बढ़ता उदारीकरण निजीकरण एवं वैश्वीकरण, औद्योगिक क्षेत्र का विनियमन, व्यापार बाधाओं को कम कर अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धा की ओर उन्मुख करना तथा पूंजी खाते को धीरे–धीरे विदेशी निवेश के लिए खोलने से भारत विदेशी निवेशकों हेतु निवेश के लिए अनुकूल गन्तव्य साबित हुआ है। इस प्रकार, विदेशी निवेश से भारत नि:संदेह एक तेजी से बढ़ती हुई विकासशील अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है।

मुख्य शब्द : नई आर्थिक नीति, विदेशी निवेश, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह, मात्रात्मक विश्लेषण।

प्रस्तावना

किसी देश की अर्थव्यवस्था में विदेशी निवेशकों द्वारा किया गया निवेश प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष दो रूपों में हो सकता है। जब विदेशी निवेशकों द्वारा किसी देश की भौतिक सम्पदा जैसे कारखाने, भूमि, पूंजीगत वस्तुएं तथा आधारित संरचना वाले क्षेत्रों में निवेश किया जाता है तो इसे विदेशी प्रत्यक्ष निवेश कहा जाता है। इसी प्रकार, विदेशी निवेशकों द्वारा देश की वित्तीय परिसंपत्तियों जैसे अंश, अनुबंध पत्र, ऋण पत्र तथा अन्य प्रतिभूतियों में निवेश किया जाता है तब इसे विदेशी परोक्ष निवेश कहते है। विदेशी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष दोनों ही प्रकार के निवेश बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं विदेशी निवेशकों द्वारा किये जाते है। विदेशी निवेश से देश के उद्योग धन्धों में प्रतिस्पर्धा एवं गुणवत्ता बढ़ती है जिसके फलस्वरूप घरेलू एकाधिकार समाप्त होता है और देश के भीतर वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतों में कमी आती है।

भारत सरकार ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विदेशी निवेश को देश के आर्थिक विकास हेतु घरेलू बचत के अनुपूरक के रूप में पहचाना और वर्ष 1972 में पूर्ण विदेशी निवेश की अनुमति प्रदान की परन्तु, प्रतिबंधात्मक सरकारी नीतियों के फलस्वरूप वर्ष 1990 तक विदेशी निवेश का स्तर निम्न रहा है। भारत में विदेशी मुद्रा विनिमय अधिनियम के अन्तर्गत ईक्विटी में विदेशी हिस्सेदारी की सीमा को अधिकतम 40 प्रतिशत रखना, विदेशी निवेश स्वीकृति की लम्बी प्रक्रिया और अर्थव्यवस्था के अनेक क्षेत्रों में विदेशी भागीदारी को प्रतिबंधित करना आदि प्रमुख ऐसे कारक रहे जिन्होंने विदेशी निवेश अन्तर्प्रवाह को हतोत्साहित किया है। संक्षेप में, स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग चार दशकों तक विदेशी निवेश का अन्तर्प्रवाह धीमा एवं कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहा है।

जुलाई 1991 की नई आर्थिक नीति की घोषणा के पश्चात् अर्थव्यवस्था का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र रहा होगा जिस पर उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण का प्रभाव न पड़ा हो। नई आर्थिक नीति ने अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने के साथ–साथ भारतीय एवं विदेशी निवेशकों को नए अवसर प्रदान

किए। वर्ष 1991 के बाजारोन्मुख आर्थिक सुधार, बढ़ता उदारीकरण निजीकरण एवं वैश्वीकरण, औद्योगिक क्षेत्र का विनियमन, व्यापार बाधाओं को कम कर अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धा की ओर उन्मुख करना तथा पूंजी खाते को धीरे–धीरे विदेशी निवेश के लिए खोलने से भारत विदेशी निवेशकों हेतु निवेश के लिए अनुकूल गन्तव्य साबित हुआ है। इस प्रकार, विदेशी निवेश से भारत निःसंदेह एक तेजी से बढ़ती हुई विकासशील अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है।

भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह ने पिछले लगभग ढ़ाई दशकों के दौरान उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय रिजर्व बैंक के विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह बुलेटिन पर एक दृष्टि डाले तो भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह वर्ष 1991–92 में 129 मिलियन डॉलर से बढ़कर वर्ष 2015–16 में 39328 मिलियन डॉलर हो गया है। विगत पच्चीस वर्षों की उक्त अवधि में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह की यह वृद्धि 236.33 प्रतिशत रही अर्थात् विगत पच्चीस वर्षों में देश में लगभग 9.45 प्रतिशत औसत वार्षिक वृद्धि के साथ विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का अन्तर्प्रवाह बढ़ा है।

भारत सरकार के औद्योगिक नीति एवं संवर्द्धन विभाग के अनुसार मॉरिशस, सिंगापुर, जापान, युनाइटेड़ किंगडम, नीदरलैण्ड़, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, साइप्रस, फ्रांस एवं संयुक्त अरब अमीरात आदि भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश करने वाले प्रमुख राष्ट्र है। इसी विभाग के प्रतिवेदन के अनुसार देश में महाराष्ट्र दादर व नागर हवेली एवं दमन व दीव, दिल्ली उत्तरप्रदेश का कुछ भाग एवं हरियाणा, तमिलनाडू एवं पाण्डिचेरी, कर्नाटक, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल सिक्किम एवं अण्डमान व निकोबार, केरल एवं लक्षद्वीप, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ आदि विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह को लुभाने वाले प्रमुख राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश है।

भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन मई 2019 के अनुसार देश के सेवा क्षेत्र, कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर क्षेत्र, दूरसंचार क्षेत्र, निर्माण हाउसिंग रियल स्टेट एवं आधारभूत संरचना क्षेत्र, ऊर्जा क्षेत्र, ऑटोमोबाईल उद्योग, ड्रग एवं औषधीय निर्माण उद्योग, रसायन उद्योग तथा पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस तथा मेटालरजिकल उद्योग विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह को लुभाने वाले प्रमुख क्षेत्र है। भारत सरकार के औद्योगिक नीति एवं संवर्द्धन विभाग के प्रतिवेदन में वर्णित राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के उपरोक्त प्रमुख क्षेत्रों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के राज्यवार अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों का मात्रात्मक विश्लेषण करना है। इस हेतु निम्न दो विशिष्ट उद्देश्य बनाये गये है।

1. भारत में विदेश प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह की वृद्धि एवं वर्तमान प्रवृतियों का अध्ययन करना।
2. देश में विदेश प्रत्यक्ष निवेश के राज्यवार अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना।

साहित्यवलोकन

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु निम्न साहित्य का पुनरावलोकन किया गया है।

मलहोत्रा, बी. (2014) ने अपने शोध लेख में भारतीय अर्थव्यवस्था पर विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के विशेषकर आर्थिक सुधारों के बाद के प्रभावों का मूल्यांकन किया। इस हेतु भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन, भारत सरकार के औद्योगिक नीति एवं संवर्द्धन विभाग तथा अन्य प्रकाशनों से भारत में विदेशी निवेश सम्बन्धि वर्ष 1991–92 से 2011–12 के द्वितीयक समंकों से विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह एवं आर्थिक संवृद्धि की वृद्धि दरों के विश्लेषण से विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के अर्थव्यवस्था पर धनात्मक प्रभावों के साथ भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह की अपार संभावनाएं पायी।

नरेन्दर एवं राज एस. धनकड़ (2016) ने अपने शोध पत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह एवं कुल रोजगार में सम्बन्ध को देखने का प्रयास किया। अध्ययन में विदेशी पूंजी अन्तर्प्रवाह के अन्तर्गत विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, विदेशी अप्रत्यक्ष निवेश, बाह्य व्यावसायिक ऋण, गैर–निवासी भारतीय जमाएं, कुल रोजगार, सरकार द्वारा आधारभूत संरचना पर व्यय, जनसंख्या वृद्धि, साक्षरता दर, सकल स्थिर पूंजी निर्माण एवं सकल घरेलू उत्पाद आदि व्याख्येय चरों को लेकर वर्ष 1991–92 से 2011–12 के द्वितीयक समंकों पर रेखीय प्रतीपगमन मॉडल, युनिट रूट टेस्ट एवं जॉनसन को–इन्टीग्रेशन टेस्ट प्रयुक्त कर विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह एवं बाह्य व्यावसायिक ऋणों को केवल नीजि क्षेत्र में बेरोजगारी कम करने में सार्थक योगदान पाया।

चौपड़ा, एस. एवं एस.के. सचदेव (2014) ने अपने शोध पत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के निर्धारकों, अन्तर्प्रवाह प्रारूप एवं दिशा तथा देश में कम विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के उत्तरदायी कारकों को जानने हेतु वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट, एशियाई विकास बैंक रिपोर्ट, संयुक्त राष्ट्र के प्रकाशन, भारतीय रिजर्व बैंक के प्रतिवेदन से द्वितीयक समंक प्राप्त किए। अन्तर्प्रवाह के निर्धारकों में बाजार का आकार, लागत कारक, वास्तविक विनिमय दर, समष्टि आर्थिक स्थायित्त्व तथा मुद्रास्फीति की दर आदि कारकों से अन्तर्प्रवाह में वर्ष 1991–92 से वर्ष 2011–12 की अवधि में 1026 गुणा वृद्धि के साथ गरीबी निवारण, बेरोजगारी व अन्य आर्थिक बीमारियों के समाधान में इसकी भूमिका सार्थक नही पायी।

त्रिपाठी, वी. एवं अन्य (2013) ने अपने शोध में वर्ष 1997 से 2011 के विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के समंकों का विश्लेषण किया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु समष्टि आर्थिक चरों के अन्तर्गत बाजार का आकार, विनिमय दर, व्यापार उदारता, ब्याज दर, मुद्रास्फीति एवं राजनीतिक पर्यावरण को सम्मिलित किया। विश्लेषण में उन्होंने उक्त समष्टि आर्थिक चरों एवं विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह में सार्थक सहसम्बन्ध पाया।

चक्रबर्ती, सी. एवं पी. बसु (2002) ने अपने शोध में VECM मॉडल प्रयुक्त किया जिससे तीन महत्त्वपूर्ण

निष्कर्ष प्राप्त हुए। प्रथम, ग्रेंगर केसुलिटी टेस्ट से परीक्षण करने पर भारत के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के कारण नही वरन् सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर से विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह बढ़ा है। द्वितीय, भारत सरकार की व्यापार उदारीकरण नीति ने विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह पर कुछ अल्पकालीन धनात्मक प्रभाव डाले है और तृतीय, भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह से प्रति इकाई श्रम लागतों में कमी से श्रम का विस्थापन हुआ है।

सिंह, के. (2005) ने अपने शोध में भारत सरकार द्वारा अस्सी के दशक में देश में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के प्रारूप एवं वर्तमान प्रवृतियों का विश्लेषण किया। उन्होंने आनुभाविक अध्ययन में आर्थिक सुधारों के बाद विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह में बढ़ती प्रवृति पायी। साथ ही विश्व के अन्य विकासशील देशों की तुलना में भारत में वर्तमान विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह की अधिक वृद्धि एवं उदारीकरण के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था पर निवेश अन्तर्प्रवाह का धनात्मक प्रभाव पाया।

कुमार, जी.एल. एवं एस. कार्तिक (2010) ने अपने शोध में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के निष्पादन पर विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के प्रभावों को जानने का प्रयास किया। उन्होंने घरेलू पूंजी, उत्पादन स्तर एवं रोजगार अवसरों के सृजन में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह की भूमिका को महत्त्वपूर्ण पाया। साथ ही विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह को देश के लिए एक लॉचिंग पैड की तरह पाया जिससे अर्थव्यवस्था में आगे किसी भी तरह के सुधार किये जा सकते है एवं पूंजी, तकनीकी ज्ञान एवं संसाधनों को बढ़ाकर देश को संवृद्धि की ओर बढ़ाया है।

सिंह, एस. (2014) ने अपने शोध में आर्थिक सुधारों के बाद अर्थव्यवस्था में देशवार एवं क्षेत्रवार विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह ने भारतीय राज्यों की आर्थिक संवृद्धि पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला है। उन्होंने राज्य विशेष में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह को लुभाने वाले कारकों पर ध्यान आकर्षित किया। साथ ही निजी निवेशकों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा के चलते एफडीआई अन्तर्प्रवाह ने इन्हें प्रोत्साहित किया है पर राज्य सरकारों से इसे हेतु और प्रयास अपेक्षित है।

प्रधान, जे.पी. एवं अन्य (2004) ने अपने शोध में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह का रोजगार एवं मजदूरी पर प्रभाव देखने का प्रयास किया। अध्ययन में उन्होंने पाया कि विदेशी फर्मों के विनिर्माण क्षेत्र के रोजगार में मजदूरी पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नही डाला जबकि विदेशी फर्मों ने अपने मजदूरों को तुलनात्मक रूप से अधिक मजदूरी प्रदान की है। उन्होंने निष्कर्ष दिया कि विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह ने श्रमिकों एवं मजदूरों को लाभ पहुंचाया है।

नागराज, आर. (2003) ने अपने शोध में भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के क्षेत्रवार प्रभावों का विश्लेषण किया। उदारीकरण के पश्चात् भारतीय उद्योगों पर किए शोध में उन्होंने पाया कि विदेशी फर्मों के देश में प्रवेश से भारतीय बाजार से कुछ फर्मे धीरे–धीरे बाहर हो रही है। परन्तु विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह से तकनीकी कुशलता एवं प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है और इससे देश के उद्योगों हेतु पूंजी निर्माण में निरन्तर बढ़ोतरी हो रही है।

शर्मा, एम. एवं एस. सिंह (2016) ने अपने शोध में भारतीय अर्थव्यवस्था पर विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के उदारीकरण से पूर्व एवं बाद के प्रभावों का चार चरणों में अध्ययन किया। अध्ययन में अन्तर्प्रवाह को प्रभावित करने वाले कारकों में बाजार का आकार, मानव संसाधनों की उपलब्धता, आर्थिक स्थायित्व, सरकारी नीतियों, विनिमय दर एवं मुद्रास्फीति को सम्मिलित किया। अध्ययन में अन्तर्प्रवाह से रोजगार सृजन एवं पूर्व स्थापित उद्योगों की उत्पादन क्षमता बढ़ोतरी पायी पर कम्प्यूटर हार्डवेयर समेत कुछ क्षेत्रों को छोड़कर शेष उद्योगों में अन्तर्प्रवाह का आकर्षण कम रहा है।

साहित्य का पुनर्रावलोकन करने पर विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह पर अधिकांश शोध 1991 की नई आर्थिक नीति के पश्चात् अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों पर हुए। इन शोध अध्ययनों में मुख्यतः अन्तर्प्रवाह की प्रवृति एवं प्रारूप, आर्थिक संवृद्धि एवं सकल घरेलू उत्पाद पर प्रभाव, भारतीय कृषि औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र पर प्रभाव, सम्पूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव तथा सरकारी नीतियों से सम्बन्धित अध्ययन हुए है। इन अध्ययनों में भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के राज्यवार अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों के मात्रात्मक विश्लेषण सम्बन्धित वर्तमान अध्ययन बहुत सीमित है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी कमी को पूरा करने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

शोध प्रद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए अपनायी गयी शोध प्रद्धति के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र, समंक एवं उनके संकलन तथा विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के राज्यवार अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में देश के उन सभी राज्यों को सम्मिलित किया गया है जो विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के अन्तर्प्रवाह को अधिक लुभाते है। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को विगत दस वर्षो में महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, तमिलनाडू, कर्नाटक, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, केरल, राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ आदि राज्यों ने अधिक लुभाया है।

समंक संकलन

प्रस्तुत शोध पत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के राज्यवार अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों के विश्लेषण हेतु द्वितीयक समंकों को उपयोग में लिया गया है। विश्लेषण में काल श्रेणी एवं अनुप्रस्थ काट दोनों प्रकार के समंक प्रयुक्त किए गए जिन्हें भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा प्रकाशित प्रकाशन, भारत सरकार के औद्योगिक नीति एवं सवर्द्धन विभाग द्वारा प्रकाशित प्रकाशन, विश्व बैंक के प्रकाशन,

अंकटाड के प्रतिवेदन, सेंटर फॉर मोनीटरिंग इण्डियन इकोनॉमी के विभिन्न प्रतिवेदनों से प्राप्त किया गया है।

समंकों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीकें

प्रस्तुत शोध पत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के राज्यवार अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों का समान्तर माध्य, प्रमाप विचलन, विचरण गुणांक, प्रतिशत, वार्षिक एवं दशकीय वृद्धि दरों से विश्लेषण किया गया। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की अधिकतम एवं न्यूनतम अन्तर्प्रवाह राशि के विश्लेषण के साथ अन्तर्प्रवाह राशि की वार्षिक वृद्धि दर एवं सकल घरेलु उत्पाद की वार्षिक वृद्धि दर को दण्ड आरेख तथा प्रमुख निवेशक देशों की निवेश राशि के साथ साथ भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय कार्यालयवार अन्तर्प्रवाह राशि को वृत आरेखों से प्रदर्शित किया गया है।

विश्लेषण एवं चर्चा

प्रस्तुत शोध पत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के राज्यवार अन्तर्प्रवाह के आर्थिक प्रभावों के विश्लेषण के अन्तर्गत विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह की वार्षिक वृद्धि दर एवं सकल घरेलु उत्पाद की वार्षिक वृद्धि दर का विश्लेषण किया गया। साथ ही भारत में निवेश करने वाले प्रमुख दस निवेशक देशों द्वारा विगत दस वर्षों में किए गए निवेश एवं उसके विचरण का विश्लेषण किया गया। इसके अतिरिक्त विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के राज्यवार अन्तर्प्रवाह का भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय कार्यालयवार अन्तर्प्रवाह राशि के अनुरूप विश्लेषण किया गया है।

एफडीआई एवं जीडीपी की वृद्धि

भारत में विगत दस वर्षों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह एवं सकल घरेलु उत्पाद की वार्षिक वृद्धि दरों के सारणी 1 में दर्शाया गया है।

सारणी 1 : भारत में विगत दस वर्षों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह एवं जीडीपी की वार्षिक वृद्धि

(वित्तीय वर्षवार राशि करोड़ रूपये में)

क्र.सं.	वित्तीय वर्ष	एफडीआई अन्तर्प्रवाह	वार्षिक वृद्धि (प्रतिशत)	जीडीपी वृद्धि (प्रतिशत)
1	2009–10	123120	–	8.5
2	2010–11	97320	–20.9	10.3
3	2011–12	165146	+69.6	6.6
4	2012–13	121907	–26.1	5.5
5	2013–14	147518	+21.0	6.4
6	2014–15	181682	+23.1	7.4
7	2015–16	262322	+44.3	8.2
8	2016–17	291696	+11.2	7.1
9	2017–18	288889	–0.9	6.7
10	2018–19	309867	+7.2	7.1

स्रोत : भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन मार्च 2019.

सारणी 1 में वर्ष 2009–10 से 2018–19 की अवधि में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह एवं उसकी वार्षिक वृद्धि के साथ सकल घरेलु उत्पाद की वार्षिक वृद्धि को दर्शाया गया है। निवेश अन्तर्प्रवाह की दशकीय वृद्धि 151.67 प्रतिशत अर्थात् 15.16 प्रतिशत औसत वार्षिक वृद्धि से विगत दस वर्षों में निवेश अन्तर्प्रवाह बढ़ा है यदयपि कुछ वर्षों में वृद्धि दर ऋणात्मक रही। उक्त अवधि में जीडीपी की औसत वार्षिक वृद्धि 7.38 प्रतिशत रही है। दोनों वृद्धि दरों को चार्ट 1 में एक साथ दर्शाया गया है।

चार्ट 1: भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह एवं जीडीपी की वार्षिक वृद्धि (2009–10 से 2018–19)

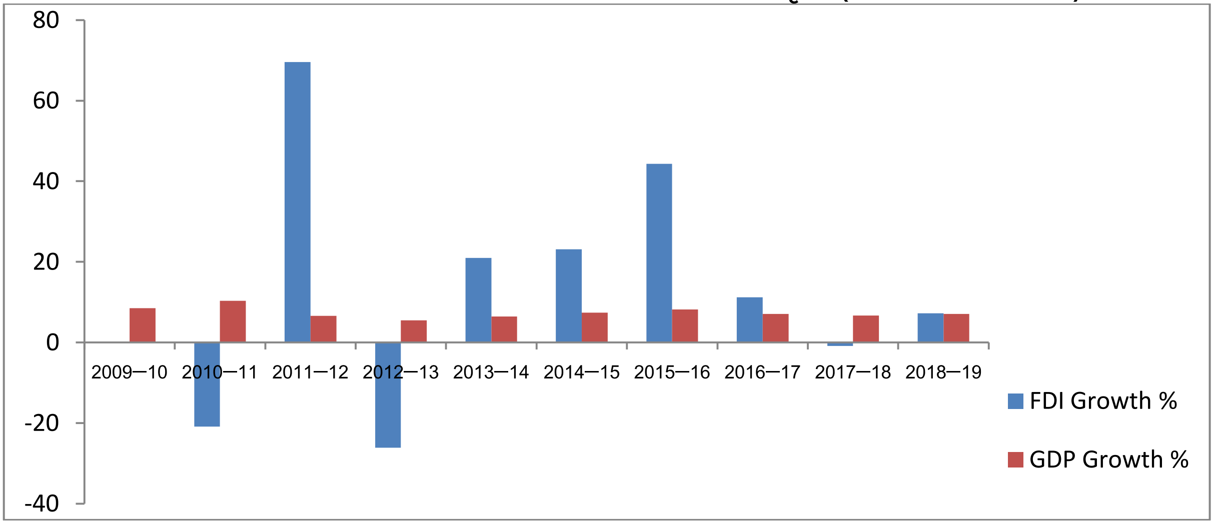

प्रमुख निवेशक देश एवं निवेश राशि

भारत में विगत वर्षो में प्रमुख दस निवेशक देशों द्वारा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह राशि को सारणी 2 में दर्शाया गया है।

सारणी 2 : भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह में प्रमुख निवेशक देशों का योगदान

(वित्तीय वर्षवार राशि करोड़ रूपये में)

क्र.सं.	देश	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19	2000–19	प्रतिशत	CV (%)
1	मॉरिसस	54706	105587	102492	57139	738156	31	34.79
2	सिंगापुर	89510	58376	78542	112362	505946	21	26.57
3	जापान	17275	31588	10516	20556	173332	7	44.00
4	नीदरलैंड़	17275	22633	18048	27036	162251	7	21.30
5	यू.के.	5938	9953	5473	9352	140370	6	29.95
6	यू.एस.ए.	27695	15957	13505	22335	146372	6	32.24
7	जर्मनी	6361	7175	7245	6187	65477	3	8.10
8	साइप्रस	3317	4050	2680	2134	51544	2	27.13
9	यू.ए.ई.	6528	4539	6767	6356	39310	2	16.86
10	फ्रांस	3937	4112	3297	2890	36825	2	15.94
योग (1 से 10)		232542	263970	248565	266347	2059583	87	
कुल अन्तर्प्रवाह		**262322**	**291696**	**288889**	**309867**	**2378886**	**100**	

स्रोत : भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन मार्च 2019.

चार्ट 2: भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह के प्रमुख निवेशक देश

(वर्ष 2000–19 अंश प्रतिशत में)

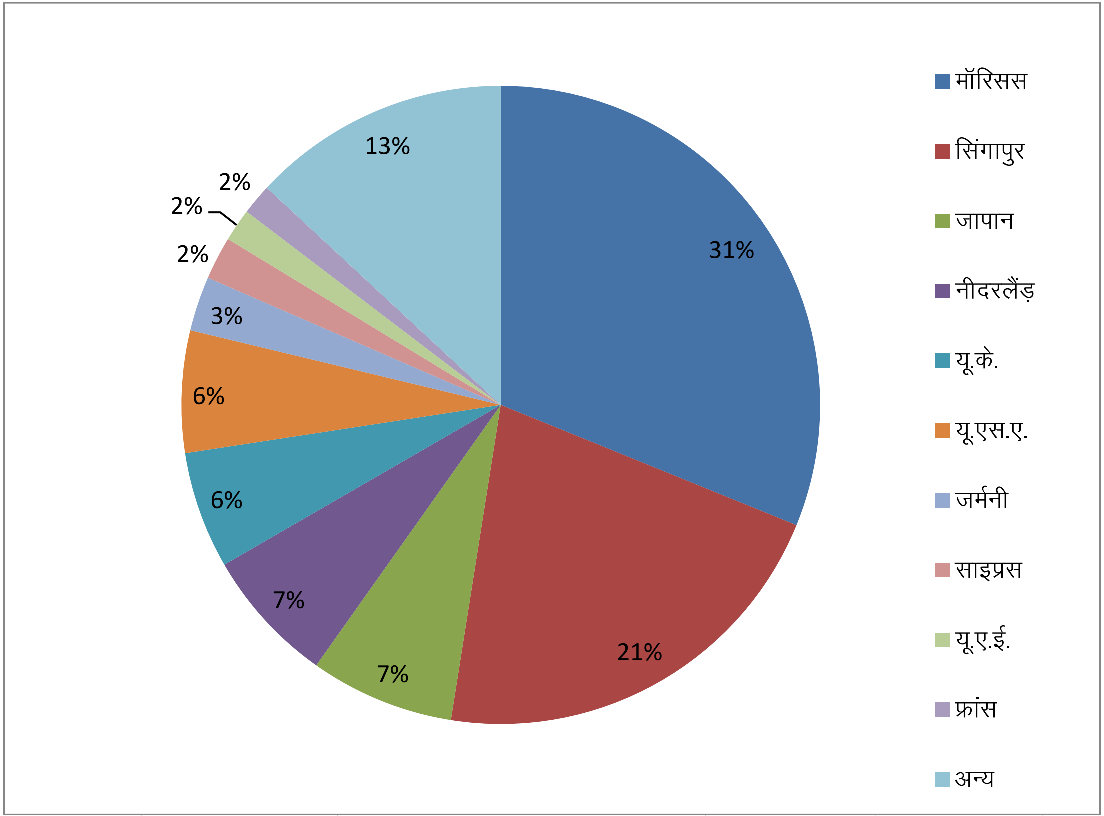

सारणी 2 में वर्ष 2015–16 से 2018–19 की अवधि में प्रमुख दस निवेशक देशों की निवेश अन्तर्प्रवाह राशि एवं उसके विचरण गुणांक को दर्शाया गया है। साथ ही वर्ष 2000 से 2019 की संचयी निवेश अन्तर्प्रवाह राशि को दर्शाया गया है। वर्ष 2015–16 से 2018–19 की अवधि में प्रमुख दस निवेशक देशों में मॉरिसस का प्रतिशत सर्वाधिक है। उक्त अवधि में प्रमुख दस निवेशक देशों में अन्तर्प्रवाह राशि का औसत सिंगापुर का अधिकतम एवं साइप्रस का न्यूनतम रहा। इसी प्रकार जर्मनी द्वारा भारत में निवेश का विचरण गुणांक कम रहा जबकि जापान की निवेश राशि का विचरण गुणांक अधिक रहा अर्थात् भारत में निवेश करने में जर्मनी ने अधिक भरोसा दिखाया है।

प्रमुख दस निवेशक देशों की वर्ष 2000 से 2019 की संचयी निवेश अन्तर्प्रवाह राशि को चार्ट 2 में दर्शाया गया है।

निवेश राशि का भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय कार्यालयवार विश्लेषण

भारत में विगत वर्षो में निवेश अन्तर्प्रवाह राशि को भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय कार्यालयवार सारणी 3 में दर्शाया गया है।

सारणी 3 : भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का RBI क्षेत्रीय कार्यालयवार अन्तर्प्रवाह

(वित्तीय वर्षवार राशि करोड़ रूपये में)

क्र.सं.	कार्यालय	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19	2000–19	प्रतिशत	CV(%)
1	मुम्बई	62731	131980	86244	80013	713990	30	32.74
2	नई दिल्ली	83288	39482	49366	70485	484219	20	32.76
3	बैंगलोर	26791	14300	55334	46963	225510	9	52.18
4	चेन्नाई	29781	14830	22354	18164	173896	7	30.30
5	अहमदाबाद	14667	22610	13457	12618	117149	5	29.00
6	हैदराबाद	10315	14767	8037	23882	106242	4	49.14
7	कोलकाता	6220	332	1409	8531	31119	1	94.52
8	कोच्ची	589	3050	1339	1807	12934	0.5	60.87
9	चंडीगढ़	177	39	697	4374	11647	0.5	155.43
10	जयपुर	332	1111	752	2553	11542	0.5	81.27
11	भोपाल	518	515	181	224	7533	0.3	50.66
12	पणजी	117	555	279	111	4930	0.2	78.38
13	कानपुर	524	50	578	234	3830	0.2	71.80
14	भुवनेश्वर	36	83	415	483	2978	0.1	89.44
15	गुवाहाटी	66	15	82	48	591	0.03	54.49
16	पटना	272	69	64	0.22	671	0.03	87.91
17	जम्मु	11	2	0	0.41	30	0.00	135.22
18	अन्य	25886	47909	48300	39377	469531	21	26.00
कुल अर्न्तप्रवाह		**262322**	**291696**	**288889**	**309867**	**2378886**	**100.0**	–

स्रोत : भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन मार्च 2019.

सारणी 3 में वर्ष 2015–16 से 2018–19 की अवधि में भारत में निवेश अन्तर्प्रवाह राशि को भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय कार्यालयवार बताया गया है। भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह राशि का प्रतिशत देखे तो सर्वाधिक निवेश अन्तर्प्रवाह मुम्बई में हुआ है। मुम्बई के साथ नई दिल्ली को मिला दे तो दोनों महानगरों में भारत में कुल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह राशि का प्रतिशत पचास हो जाता है। इसी प्रकार यदि विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह राशि का विचरण गुणांक देखा जाए तो चंडीगढ़ का 155.43 प्रतिशत है, जो सर्वाधिक है जबकि अहमदाबाद का विचरण गुणांक 29.00 प्रतिशत है, जो सबसे कम है अर्थात् विदेशी निवेशकों का अहमदाबाद में भरोसा अधिक है। भारत में भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय कार्यालयवार वर्ष 2000 से 2019 की संचयी विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह राशि को चार्ट 3 में दर्शाया गया है।

चार्ट 3: भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का RBI कार्यालयवार अन्तर्प्रवाह (वर्ष 2000–19 अंश प्रतिशत में)

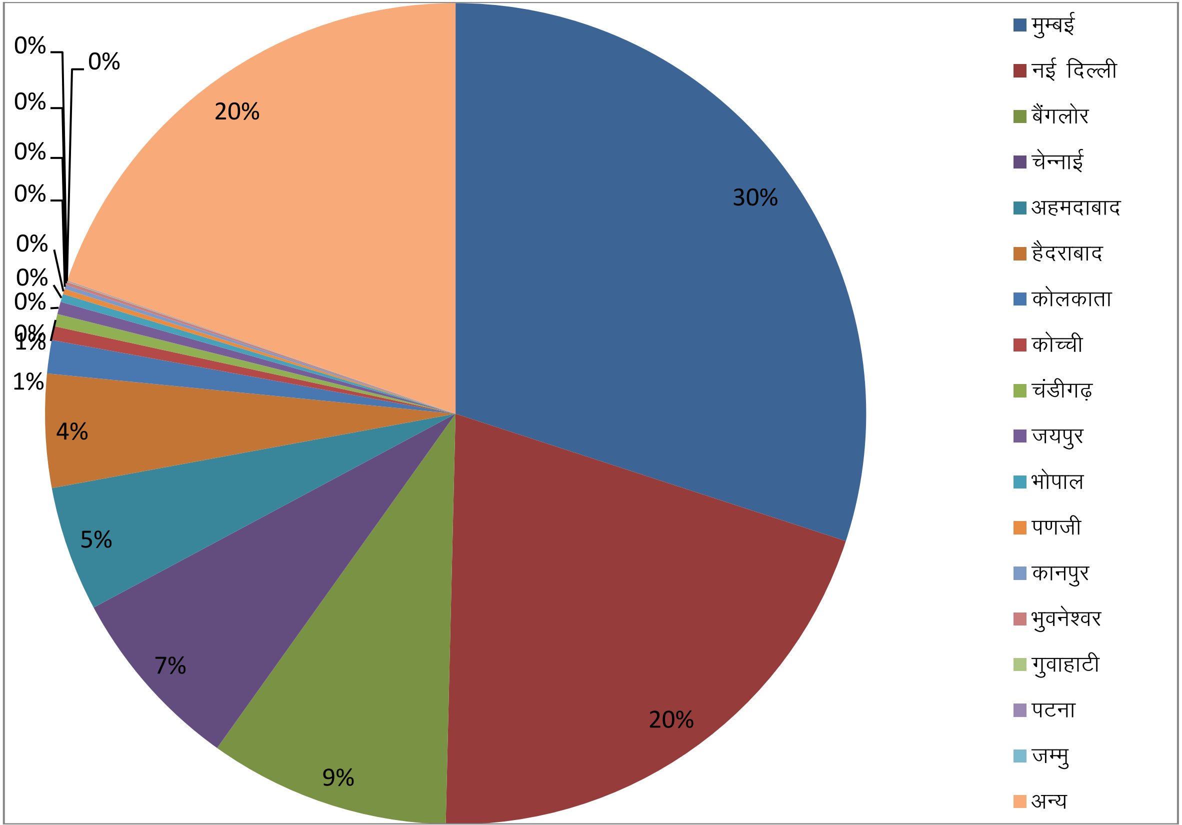

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपरोक्त विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए है जिनके आधार पर सुझाव दिए गए है:

1. भारत के आर्थिक विकास पर विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। देश में विगत दस वर्षो में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह की औसत वार्षिक वृद्धि 15.16 प्रतिशत रही है जबकि सकल घरेलु उत्पाद की औसत वार्षिक वृद्धि 7.38 प्रतिशत रही है।
2. भारत में वर्ष 2015–16 से 2018–19 की अवधि में प्रमुख दस निवेशक देशों में मॉरिसस का निवेश प्रतिशत सर्वाधिक रहा है जबकि निवेश करने में जर्मनी ने अधिक भरोसा जताया है अतः देश में विदेश निवेश को लुभाने हेतु माहौल को और बेहतर बनाया जाना चाहिए।
3. भारत में कुल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अन्तर्प्रवाह राशि का पचास प्रतिशत केवल मुम्बई एवं नई दिल्ली महानगरों में निवेश हो जाता है जबकि विदेशी निवेशकों का अहमदाबाद के साथ मुम्बई, नई दिल्ली एवं चेन्नाई जैसे महानगरों में भरोसा अधिक है अतः सरकार द्वारा देश के अन्य राज्यों एवं नगरों में विदेश निवेश बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Annual Report (2017-18), Department of Industrial Policy and Promotion, Government of India, New Delhi.

Chakraborty, C. and P. Basu, “Foreign Direct Investment and Growth in India: a Cointegration Approach”, Applied Economics, 2002, Vol. 34 (9), PP. 1061-1073.

Chopra, S. and S. K. Sachdeva, “Analysis of FDI Inflows and Outflows in India”, Journal of Advanced Management Science, Vol. 2 (4), Dec. 2014, PP. 326-332.

Economic Survey, Ministry of Finance, Government of India, New Delhi, Various Issues.

Khawar, M., “Foreign Direct Investment and Economic Growth: A Cross-Country Analysis”, Global Economy Journal, Volume 5(1), 2005.

Kong, D. A. and Sakthivel S., “A Study on Foreign Investment in India since 1990s”, International Area Review, Vol. 7 (2), 2004.

Kumar, G.L. and S. Kartik, “Sectoral Performance Through Inflows of Foreign Direct Investment (FDI)”

Kumar, N., “WTO Regime, Host Country Policies and Global Patterns of Multinational Enterprises Activity: Implications of Recent Quantitative Studies for India”, Economic and Political Weekly, 36(1), Jan. 2001.

Lall, Sanjaya and Shveeten, Paul, “Foreign Investment, Transnational and Developing Countries”, Mcmillan Press, London, 1997.

Malhotra, B. “Foreign Direct Investment: Impact on Indian Economy”, Global Journal of Business Management and Information Technology, Vol. 4 (1), 2014, PP. 17-24.

Ministry of Commerce and Industries, Government of India, New Delhi, Various Issues.

Ministry of Finance, Departnemt of Econommic Affairs, Government of India, New Delhi, Various Issues.

Nagraj, R., "Foreign Direct Investment in India in the 1990s Trends and Issues", Economic and Political Weekly, April 26, 2003.

Narang, Kamal and Ravinder Singh, "Position of Foreign Direct Investment In India", The ICFAI University, Journal Of Financial Economics, Vol. VI (3), Sep. 2008.

Narender and Raj S. Dhankar, "Foreign Capital Inflows and Growth of Employment In India: An Empirical Evidence from Public and Private Sector", International Journal of Economics and Finance, Vol. 8 (2), 2016, PP. 189-196.

Pradhan, J.P. et.all, "Foreign Direct Investment and Lobour: The case of Indian Manufacturing", 2004.

Rao, K.S et.all, "Foreign Direct Investments in the Post Liberalization Period: A Overview", Journal of Indian School of Political Economy, July-Sept, 1999.

Report of the Steering Group on Foreign Direct Investment, Planning Commission, Government of India, New Delhi, August 2002.

Reserve Bank of Iinda's Monthly Bulletin on Foreign Direct Investment, Various Issues.

Singh, K., "Foreign Direct Investment in India: A Critical Analysis of FDI from 1991-2005", Centre For Civil Society, New Delhi, Research Internship Programme, 2005.

Singh, S. et.al. "Foreign Direct Investment in India: Future and Growth Policies- An Overview", Journal of Management Research and Analysis, Vol. 1 (1), Oct. 2014.

Sharma, M. and S. Singh, "Impact of FDI on Indian Econmy", International Journal of Innovative Research & Development, Vol. 5 (2), Jan. 2016.

Tripathi, V. et al, "Foreigh Direct Investment and Macro Economic Factors: Evidence from the Indian Economy", Asia-Pacific Journal of Management Research and Innovation, 2013, Vol. 2, PP. 46-65.

Websites related to the data of FDI inflows in India: http://finmin.nic.in, www.rbi.org.in, www.indiabudget.nic.in

World Investment Report, 2016 published by United Nation Conference on Trade and Development (UNCTAD).